परागा 5

पाठ 1. चिड़िया

पाठ का परिचय

यह कविता एक चिड़िया के मनोभावों का वर्णन करती है। चिड़िया मनुष्यों को संबोधित करते हुए पूछ रही है कि उसने उनका क्या बिगाड़ा है, जो वे उसे कैदी बना लेते हैं। वह मनुष्य से कहती है कि उसे दाने दिखाकर कैदी न बनाए। उसे खाने की परवाह नहीं है, वह तो निश्चिंत उड़ना ही पसंद करती है। चिड़िया बता रही है कि उसे घास का घोंसला ही प्रिय है। मनुष्यों को तो प्रकृति से भय होता है परंतु चिड़िया को प्रकृति से डर नहीं है। चिड़िया को पेड़ों की हरी डाल पर फुदकना आता है और वहीं गाते हुए उन्हें जीवन का आनंद मिलता है। गरमी-सरदी आदि ऋतुओं की चिड़िया को कोई परवाह नहीं, वह बस अपने झुंड में रहना चाहती है। अकेले रहने की उसकी इच्छा नहीं है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

स्वतंत्रता हम मनुष्यों की ही नहीं, प्राणिमात्र की मूलभूत आवश्यकता होती है। हमें पशु-पक्षियों की स्वतंत्रता का सम्मान करना चाहिए तथा उन्हें कैद नहीं करना चाहिए।

पाठ का वाचन

पहले अध्यापक/अध्यापिका स्वयं कविता पाठ करें। बच्चे पुस्तकें बंद रखकर सुनें। कविता को पूरी लय के साथ पढ़ें। बच्चों से अनुकरण करने को कहें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्नलिखित प्रश्न पूछते हुए महत्वपूर्ण चर्चा करें।

- बच्चों को पक्षी कैसे लगते हैं?
- क्या उन्हें पिंजरे में बंद रोते-फड़फड़ाते पक्षियों को देखकर बुरा लगता है?
- खुले आसमान में झुंड में उड़ते पक्षी कैसे लगते हैं?